(IJDSSH) 2016, Vol. No. 1, Jan-Jun **e-ISSN: 2455-5142; p-ISSN: 2455-7730**

HINDI STATUS IN MAURITIUS

Dr Anju Dubey
Asst Prof, Hindi, DAV (PG) College, Bulandshahr

मॉरिशस में हिन्दी की स्थिति

डा0 अंजू दुबे

सह आचार्य–हिन्दी डी0ए0वी0 स्नातकोत्तर महाविद्यालय बुलन्दशहर।

मॉरिशस द्वीप की स्थिति हिन्द महासागर के दक्षिण पश्चिम में स्थित एक आकर्षक मोती के समान है। फ्रेंच उपन्यासकार अलेक्सान्द्र जुमा अपने उपन्यास 'जॉर्ज' में मॉरिशस को 'भारत की पुत्री' मानते हैं। महात्मा गांधी के अनुयायी डा० मणिलाल इसे 'लघु भारत' कहते हैं और डा० धर्मवीर भारती ने इस अनोखे द्वीप को 'इन्द्र धनुष की काँपती प्रत्यंचा' कहा है।[1]

मॉरिशस का इतना सुन्दर और आकर्षक वर्णन निरुद्देश्य नहीं है। प्राकृतिक सुन्दरता से भरपूर इस द्वीप का तन ही नहीं, मन भी सुन्दर है। भारत का इससे सम्बन्ध आज का नहीं जन्म–जन्मांतरों का है। यहाँ का जन–गण भारत, यहाँ की वाणी भारती है। मॉरिशस का खोजी भी वही था जिसने पश्चिमी दुनिया के लिए भारत की खोज की यानि वास्को डि गामा। उसने अपने देश पुर्तगाल से लाकर यहाँ लोगों को बसाया किन्तु वे यहाँ स्थायित्व न पा सके। मॉरिशस का सत्ता कन्दुक पुर्तगालियों से स्पेनियों, डचों, फ्रांसीसियों से होता हुआ अन्त में अंग्रेजों के हाथ में समा गया। क्रीतदासों के सेवकत्व पर अंग्रेजों का अधिकार सुख हिलोरे ले रहा था किन्तु अचानक तुषारापात हुआ। सन् 1883 में ब्रिटिश संसद ने एक युगान्तकारी निर्णय दिया और दुनिया में फैले अपने सभी उपनिवेशों में दास प्रथा का अन्त कर दिया। इस निर्णय से मॉरिशस में दासत्व का अभूतपूर्व संकट आ गया। अतः भारत के जनसंख्या आधिक्य से निश्चिन्त अंग्रेजों ने छलाविष्ट जाल फैलाया और हजारों की संख्या में शर्तबन्दी कानून के तहत कलकत्ता और मद्रास के बन्दरगाहों से जानवरों की तरह जहाज पर लाकर मजदूर मॉरिशस आदि भेजे गए। जबरन भेजे गए शर्तबन्द मजदूर गिरमिटिया मजदूर कहलाए। झूठे आश्वासनों से छले हुए ये मजदूर भौतिक और आत्मिक दोनों ही रूपों में टूट चुके थे। आत्मा के सम्बल के रूप में यदि कुछ था तो हिन्दी और हिन्दोस्तां। ये निराशा के गहन अँधेरे में डूबकर अपने साथ लाए 'रामचरितमानस' और 'हनुमान चालीसा' के पाठ में खो जाते और संबल पाते। हनुमान की झंडी तले ये कहाँ हार मानने वाले थे। गुलामी के वर्ष बीते। मानव

(IJDSSH) 2016, Vol. No. 1, Jan-Jun **e-ISSN: 2455-5142; p-ISSN: 2455-7730**

को रौंदने वाली हजारों आँधियां आईं और गईं पर आज भी मॉरिशस में मानव का आत्मविश्वास मुस्करा रहा है।[2]

मॉरिशस में भारत से जाने वाले कई भाषाओं के मजदूर थे किन्तु अधिसंख्य हिन्दी व भोजपुरी के थे। हिन्दी और भोजपुरी मॉरिशस के श्रमजीवी समुदाय की भाषा बनी। भोजपुरी ने जहाँ मॉरिशस की सांस्कृतिक धरोहर को एक सूत्र में बाँधने का काम किया। वहीं हिन्दी गुलामी की जंजीरों को तोड़ने के लिए हथौड़ा बन कर उठी। कुलियों के रूप में ले जाए गए पूर्वजों के त्याग और तपस्या के फलस्वरूप जो कुछ मरीच–मॉरिशस द्वीप वासियों को मिला वह थी हिन्दी। मॉरिशस के प्रमुख हिन्दी कथाकार रामदेव धुरन्धर लिखते हैं, ''मॉरिशस ने इतिहास को हिन्दी में जिया है। हिन्दी में ही स्वतन्त्रता तक की यात्रा तय की है। स्वतन्त्रता के बाद अस्मिता की खोज में यहाँ के हिन्दी भाषियों और राजनयिकों ने हिन्दी का ही सहारा लिया है। इस लम्बी दौड़ में हिन्दी को नकारा नहीं गया है और यह हिन्दी के लिए बहुत बड़ी विजय है।''[3]

आज मॉरिशस में राजकीय भाषा अंग्रेजी और फ्रेंच हैं, पर जनता–जनार्दन की भाषा हिन्दी है। यहाँ प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा तक हिन्दी में पढ़ाई होती है। रामदेव धुरन्धर बताते हैं, ''बच्चा जब पाँच वर्ष की उम्र में स्कूल जाता है तो उसे फ्रेंच और अंग्रेजी के साथ–साथ एक भारतीय भाषा भी पढ़नी पढ़ती है। हिन्दू है तो हिन्दी और मुसलमान है तो उर्दू। गगग सरकारी व्यवस्था के साथ–साथ धार्मिक व सामाजिक संस्थाएँ भी हिन्दी के प्रचार–प्रसार में लगी हैं। नागरी प्रचारिणी सभा तथा आर्य समाज आदि इनमें प्रमुख हैं।[4] *''एक समय था जब पेड़ के नीचे पत्थरों पर बैठकर हिन्दी का पठन पाठन होता था, पर आज इसी निमित्त बड़ी–बड़ी इमारतें बन चुकी हैं। जहाँ पहलें 30 रूपये मासिक पर वेतन तथा बिना किसी प्रशिक्षण के हिन्दी पढ़ाने वाले अध्यापक मिल पाते थे, वहाँ आज अंग्रेजी और फ्रेंच के सम्मानित प्रशिक्षित अध्यापक हिन्दी पढ़ाने में लगे हैं।*

मॉरिशस के लोग हिन्दी के प्रति कितने समर्पित है, इसका पता नागपुर में 1975 में हुए प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन से ही लग जाता है। उस समय द्वितीय विश्व हिन्दी सम्मेलन के लिए दो प्रबल दावेदार थे मॉरिशस और फिजी। मॉरिशस का प्रतिनिधि मंडल सबसे बड़ा था और इसका नेतृत्व स्वयं तत्कालीन प्रधानमंत्री डा० शिवसागर रामगुलाम कर रहे थे । अन्ततः अगस्त 1976 में मॉरिशस में दूसरा विश्व हिन्दी सम्मेलन सम्पन्न हुआ।

मॉरिशस के आरम्भिक भारतवंशी अनपढ़ थे, अशिक्षित थे। निराशा के निविड़ तम में वे रामचरितमानस व हनुमान चालीसा का पाठ करते थे किन्तु शनैः शनैः अज्ञानता का कुहासा छटाँ और हिन्दी पाठन और श्रवण से आगे बढ़कर लेखन की भाषा बनी। मॉरिशस के हिन्दी साहित्य को अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से तीन भागों में बांटा गया है–

(IJDSSH) 2016, Vol. No. 1, Jan-Jun **e-ISSN: 2455-5142; p-ISSN: 2455-7730**

1. *प्रारम्भिक काल या प्रेरणा काल सन् 1913 से 1935 ई0 तक*
2. *मध्य काल या संघर्श काल सन् 1936 से 1968 ई0 तक*
3. *आधुनिक काल या विकास काल सन् 1968 ई0 से अब तक*

प्रारम्भिक काल 1913 से आरम्भ करने का कारण है इसी वर्ष प्रकाशित हुई 'होली' नामक कविता व 'सत्य होली' नामक लेख । 'होली' व 'सत्य होली' 'हिन्दुस्तानी' प्रेस से प्रकाशित होने वाले हिन्दुस्तानी पत्र में छपे थे। इस प्रकार यह पत्र व प्रेस मॉरिशस में प्रकाशन की नींव रखता है, इससे पूर्व मॉनरिशस में हिन्दी में लिखित साहित्य नहीं था और इस प्रकार साहित्य की धारा अपने उत्स से निकलकर शताधिक गिरि प्रान्तरों को धन्य करती, अपने तटवर्ती सहृदय रसिकों को तृप्त करती हुई अविच्छिन्न रूप से आगे बढ़ती रही। प्रारम्भिक काल व मध्य काल के कवियों को खोजने का कार्य प्रह्लाद शरण ने अपने संकलन द्वय 'मॉरिशस का आदि काव्य कानन' एवं 'मॉरिशस के मध्यकालीन काव्य–प्रसून' द्वारा किया । अगाध हिन्दी प्रेमी डा० शिवसागर रामगुलाम मॉरिशस के राष्ट्रपिता थे तो उनके अनन्य सहयोगी, देश प्रेम की पुण्य धारा प्रवाहित करने वाले डा० ब्रजेन्द्र कुमार भगत 'मधुकर' को राष्ट्रकवि माना जाता है। मधुकर जी की कविताएँ देश–प्रेम व भारतीयता के प्रेम में आकंठ डूबी हुई है।

मॉरिशस की हिन्दी कविता के आधुनिक काल का आरम्भ सन् 1968 में स्वातंत्र्य सूर्य की रश्मियों के साथ ही हुआ। इस काल के कवियों में सोमदत्त बखोरी जी प्रतिनिधि रचनाकार के रूप में हैं उनकी कविताओं में एक ओर प्रेम और सौन्दर्य है तो दूसरी ओर युगचेतना भी दिखाई पड़ती है। उनका भारतीय संस्कृति में अगाध विश्वास था। भारत के विषय में वे अपनी कविता में कहते हैं

भारत की महिमा न्यारी है

न्यारी इसकी सारी बातें

संस्कृति इसकी न्यारी हे [5]

हिन्दी पर तो वे मानों जान ही छिड़कते हैं

जो हिन्दी मंदिर जाता है, हिन्दी का दीप जलाता है।

हम उस हिन्दी प्रेमी का सम्मान से स्वागत करते हैं।[6]

आधुनिक काल में जो रचनाकार युग की पहचान बनकर उभरा, वह हैं महान कवि, कथाकार व नाटककार – 'अभिमन्यु अनत'। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। उन्होंने मॉरिशस की अस्मिता को जीवित किया साथ ही नवोदित कवियों को भी प्रोत्साहन दिया। उन्होंने बीस वर्ष तक 'बसंत' पत्रिका का सम्पादन किया। 'अनत जी' के अब तक पाँच कविता संग्रह छपे हैं– 'नागफनी में उलझी–साँसें, 'कैक्टस के दाँत', 'एक डायरी बयान', 'गुलमोहर खौल उठा' तथा

(IJDSSH) 2016, Vol. No. 1, Jan-Jun **e-ISSN: 2455-5142; p-ISSN: 2455-7730**

'अभिमन्यु अनत : समग्र कविताएँ'। व्यवस्था के प्रति शिकायत दर्ज कराते 'अनत' नियति से भी प्रश्न कर बैठते हैं–

तुमने आदमी को खाली पेट दिया

ठीक किया

पर एक प्रश्न है रे नियति

खाली पेट वालों को

तुमने घुटने क्यों दिए

फैलने वाला हाथ क्यों दिया।[7]

'अनत' जी के अनन्तर 'हेमराज सुन्दर' सबसे समर्थ युवा स्वर है तथा मुकेश जीबोध मॉरिशस में हिन्दी गजल के प्रवर्तक रहे हैं।

प्रारम्भिक काल में कहानियों के विकास में 'वर्तमान' 'मजदूर', 'समाजवाद' तथा 'कांग्रेस' सरीखी पत्रिकाओं ने महत्वपूर्ण योगदान दिया किन्तु उत्कर्ष काल 1967 में कहानी संकलन 'अंकुर' के प्रकाशन के साथ आया। इस प्रकार कहानियों का विकास पत्रकारिता के विकास के साथ–साथ ही हुआ। जन जागरण और समाज सुधार कहानियों के प्रमुख विषय हैं।

कहानी–लेखन में भी 'अभिमन्यु अनत' अपनी सशक्त उपस्थिति दिखाते हैं। इनका पहला कहानी संग्रह 'खामोशी के चीत्कार' 1976 में राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित हुआ। इसके अतिरिक्त 'इन्सान और मशीन', 'वह बीच का आदमी' और 'एक थाली समन्दर' इनके प्रमुख कहानी संग्रह है। रामदेव धुरन्धर मॉरिशस के दूसरे प्रमुख कहानीकार है। इनकी कहानियों में मॉरिशस का व्यापक समाज चित्रित होता है।

मॉरिशस के हिन्दी उपन्यास साहित्य का आरम्भ सन् 1960 में कृष्णलाल बिहारी के पहला कदम के साथ हुई। अभिमन्यु अनत उपन्यास दरबार में भी अपना भागीरथ प्रयत्न कर रहे हैं। वास्तव में अभिमन्यु अनत ही मॉरिशसी 'हिन्दी उपन्यास के जनक और विस्तारक'[8] *है, 'लाल पसीना', 'गांधी जी बोले थे' एवं 'और पसीना बहता रहा' महाकाव्यात्मक चेतना से सम्पन्न उपन्यास हैं। अनत जी के पश्चात् रामदेव धुरन्धर मॉरिशस के दूसरे प्रमुख उपन्यासकार हैं। गिरमिटिया मजदूरों की करूणाप्लावित मार्मिक गाथा, उनके अदम्य साहस व संघर्ष की कथा को लगभग सभी कथाकारों ने अपना वर्ण्य विषय बनाया है।*

मॉरिशस के हिन्दी नाटकों की बात की जाए तो वह भी अभिमन्यु अनत के उल्लेखाभाव में विराट शून्य उपस्थित करता है। 'विरोध', 'तीन दृश्य' व 'गूँगा इतिहास' इनके प्रमुख नाटक है। इनमें 'गूँगा इतिहास' अप्रवासी भारतीयों की करूण गाथा है।

(IJDSSH) 2016, Vol. No. 1, Jan-Jun **e-ISSN: 2455-5142; p-ISSN: 2455-7730**

हिन्दी को अपने विपुल साहित्य से समृद्ध करने वाले मॉरिशस के हिन्दी सेवियों की, इन भारतवंशियों की भारतीयों से कुछ अपेक्षाएँ भी हैं। इनकी विडम्बना है कि हिन्दी साहित्य के इतिहास में कहीं इनका उल्लेख तक नहीं होता। हिन्दी भाषी या हिन्दी सेवी इन्हें पढ़ने को तैयार नहीं होते। अभिमन्यु अनत अपनी आत्मकथा में लिखते हैं कि हिन्दी जगत् में ईर्ष्या की धार इतनी पैनी होती है कि जिसे कुल्हाड़ी नहीं काट सकती उसे वह काट जाती है।[9] प्रसंग उनके उपन्यास 'और नदी बहती रहे' के विक्रय से सम्बन्धित है। उनकी वह पुस्तक एक स्कूल में हाथों हाथ बिकी। यदि किसी ने नहीं खरीदी तो वे थे पाठशाला के चारों हिन्दी अध्यापक। एक चीनी अध्यापिका ने भी हिन्दी न जानने के बावजूद ली, पूछने पर कहा मॉरिशस का साहित्य है, अपने संग्रह में काम तो आएगा। यह थी उसकी देशभक्ति। किन्तु अनत जी यह कहकर संतोष करते हैं कि खैर, कुछ यातनाएँ ऐसी भी होती हैं जो बाँटी नहीं जातीं।[10]

प्रसिद्ध कथाकार रामदेव धुरंधर यह माँग करते हैं कि भारतीय दूतावास को हिन्दी के प्रचार प्रसार में वांछित सहयोग देना चाहिए। दूतावास में ऐसे लोग नियुक्त किए जाने चाहिए जो हिन्दी भाषी हों और भारतीय संस्कृति के प्रति सच्चा सरोकार रखते हों। निश्चय ही धुरंधर जी का यह अनुभव भोगा हुआ यथार्थ है।

मॉरिशस के साहित्यकारों की एक समस्या प्रकाशन को लेकर भी है। उनके देश में हिन्दी की प्रकाशन व्यवस्था नहीं है जिससे उन्हें दरियागंज, दिल्ली पर निर्भर रहना पड़ता है। अतः वे चाहते हैं कि भारत सरकार एक संस्था बनाकर उनके यहाँ की पांडुलिपियां मंगाए तथा चुनिंदा कृतियों को प्रकाशित कराने की व्यवस्था करे। सम्भवतः साहित्यकारों की ये समस्यायें अपेक्षित कर्ण–गह्वरों में पहुँचकर सार्थक समाधान खोजेंगी।

अन्त में मुनीश्वर लाल चिंतामणि के शब्दों में ही मॉरिशस के साहित्यकारों की अपेक्षा को आप तक संप्रेषित करना समीचीन होगा–

उस आदमी से जाकर कहो कि

अपने लोगों से वह हिन्दी में बात करे

और ऐसा करके वह

हिन्दी भाषी होने का गौरव महसूस करे

विश्व हिन्दी परिवार से

जुड़े होने का गर्व करे

तब उसका जीना

सच्चा जीना होगा।[11]

(IJDSSH) 2016, Vol. No. 1, Jan-Jun **e-ISSN: 2455-5142; p-ISSN: 2455-7730**

संदर्भ सूची

1. *मॉरिषस का हिन्दी साहित्य, सुनील विक्रम सिंह 'प्रवासी साहित्य महाविषेशांक, पृ0 77*
2. *विष्व हिन्दी की यात्रा, लल्लन प्रसाद व्यास, पृ0 107*
3. *मॉरिषस का हिंदी साहित्य, सुनील विक्रम सिंह 'प्रवासी' साहित्य महाविषेशांक से उद्धृत पृ0 79*
4. *विदेषी हिन्दी विद्वानों की भारत से अपेक्षा (परिचर्चा), नया ज्ञानोदय, जन–2004, पृ0 33–34*
5. *साक्षात्कार, षोध पत्रिका मई जून, जुलाई 2007, पृ0 81*
6. *वही, पृ0 82*
7. *वहीं , प्र0 77*
8. *साक्षात्कार, मई, जून, जुलाई 2007 में प्रकाषित कमल किषोर गोयनका के लेख 'हिन्दी का प्रवासी साहित्य' पृ0 21 से उद्धृत*
9. *वर्तमान सहित्य के प्रवासी महाविषेशांक में प्रकाषित अभिमन्यु अनत की आत्मकथा के अंष से उद्धृत, पृ0 93–94*
10. *वही, पृ0 94*
11. *साक्षात्कार मई, जून, जुलाई, 2007 में प्रकाषित प्रवासी भारतीय हिन्दी लेखन विषेशांक से उद्धृत पृ0 88*

REFERENCES

1. Mauritius ka Hindi Sahitya, Sunil Vikram Singh, 'Pravasi' Sahitya Mahavisheshank, pg 77
2. Vishva Hindi ki Yatra, Lallan Prasad Vyas, pg 107
3. Mauritius ka Hindi Sahitya, Sunil Vikram Singh, Retrieved from 'Pravasi' Sahitya Mahavisheshank, pg 79
4. Videshi Hindi Vidwanon ki Bharat ki Apeksha (Paricharcha), Naya Gyanoday, 2004, pg 33-34
5. Shakshatkaar, Research Journal, May, June, July 2007, pg 81
6. Ibid pg 82
7. Ibid pg 77
8. Retrieved from 'Hindi ka Pravasi Sahitya', Kamal Kishore Goenka, pg 21 published in Shakshatkaar, Research Journal, May, June, July 2007.
9. Retrieved from Autobiography of Abhimanyu Anat published in Vartmaan Sahitya ke Pravaasi Mahavisheshank, pg 93-94
10. Ibid pg 94
11. Retrieved from Pravasi Bhartiya Hindi Lekhan Visheshank, pg 88 published in Shakshatkaar, Research Journal, May, June, July 2007.